



BBO-1601100101062000 Seat No. _____

B. A. (Sem. VI) (CBCS) (WEF-2016) Examination

July - 2021

Sanskrit

(Shrimadbhagvadgeeta-Adhyaya 10 to 18)

(Common Paper for 2015-2016))

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours]

[Total Marks : 70

सूचना / Instructions :

(१) नीचेनामांथी कोष्पण पांय प्रश्नोना उत्तरो आपो.

(1) Answer any five questions.

(२) अथा ञ प्रश्नोना गुण सरभा छे.

(2) All questions carry equal marks.

१ नीयेना श्लोकोनुं आवश्यक समजूती साथे भाषांतर करो. १४

1 Translate and explain the following verses. 14

(i) यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदुर्जितमेव च ।

तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोऽशसंभवम् ॥

(ii) ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् ।

ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥

२ नीयेना श्लोकोनुं आवश्यक समजूती साथे भाषांतर करो. १४

2 Translate and explain the following verses. 14

(i) गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् ।

जन्ममृत्युजरादुःखैर्वियुक्तोऽमृतमश्नुते ॥

(ii) ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ।

मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥

३ नीयेना श्लोकोनी पूर्ति करो. १४

3 Fill up the following verses. 14

(i) यदादित्यगतं.....मामकम् ।

(ii) तुल्यनिन्दास्तुर्मौनी.....प्रियो नरः ॥

४	नीचेना श्लोकोनी पूरति करो.	१४
4	Fill up the following verses.	14
	(i) संतुष्टः सततं.....स मे प्रियः ॥	
	(ii) सर्वस्य चाहं.....चाहम् ॥	
५	‘उपनिषद्’ शब्दनो अर्थ स्पष्ट करी, तेना मुष्य सिद्धांतो संक्षेपमां वर्णवो.	१४
5	Explain the term ‘उपनिषद्’ and discuss the main principles of Upanishadas.	14
६	भारतीय दर्शनमां प्रस्थानत्रयीनुं प्रदान भूलवो.	१४
6	Evaluate the contribution of प्रस्थानत्रयी in Indian philosophy.	14
७	भक्तियोगः (अध्याय-१२)नो सारांश आपी गीतामां तेनुं महत्त्व समजावो.	१४
7	Summarise the भक्तियोगः (अध्याय-१२) and explain its importance in the गीता.	14
८	पुरुषोत्तमयोगः (अध्याय-१५)नो सारांश आपी गीतामां तेनुं महत्त्व समजावो.	१४
8	Summarise the पुरुषोत्तमयोगः (अध्याय-१५) and explain its importance in the गीता.	14
९	नीचेना पर टूंकनोंध लभो.	१४
9	Write short-notes on the following.	14
	(i) शारीरं तपः	
	(ii) विभूतियोगः	
१०	नीचेना पर टूंकनोंध लभो.	१४
10	Write short-notes on the following.	14
	(i) अश्वत्थवृक्षः	
	(ii) नैष्कर्मसिद्धिः	